आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब ❁ बानी

वर्ष : नौंवा | अंक : बारहवां | अप्रैल-2012

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in Website : www.ajaibbani.org

4 **सावन प्यारे बक्शन हारे**
(एक शब्द)

5 **नशा छोड़ें**
बाबा सावन सिंह जी द्वारा एक संदेश

13 **असल-नकल**
(वारां- भाई गुरदास जी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी (बैंगलोर)

25 **सवाल-जवाब**
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया ।
फोनः 0 99 50 55 66 71 व 0 98 71 50 1 999 **अनुवादक :** मास्टर प्रताप सिंह
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोनः 099 28 92 53 04
उप सम्पादिका : नंदिनी **सहयोग :** ज्योति सरदाना, रोज़ी आनन्द व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम - 16 पी.एस., वाया- मुकलावा, तहसील - रायसिंहनगर - 335 039, जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान)

प्रकाशन दिनांक 1 अप्रैल 2012 - 121 - **मूल्य - पाँच रुपये**

सावन प्यारे बक्शन हारे

सावन प्यारे बक्शन हारे, दुःखियां दे दर्द निवार दयो, (2)

1. रूहां सड़दियां तपदियां साडियां, (2)
अमृत प्याके ठार दयो, (2)
सावन प्यारे .....

2. असीं भुल्ल गए तेरे नाम नूं, (2)
साडी बिगड़ी नूं आ के सवार दयो, (2)
सावन प्यारे .....

3. बेड़ा सागर विच ठिल गया, (2)
बनो मल्लाह ते तार दयो, (2)
सावन प्यारे .....

4. दया करो नाम जपा लवो, (2)
साडी होमैं हंगता नूं मार दयो, (2)
सावन प्यारे .....

5. हत्थ बन अरजां हैं मेरियां, (2)
गरीब 'अजायब' दी सार लयो, (2)
सावन प्यारे .....

बाबा सावन सिंह जी द्वारा नशे पर एक संदेश

नशा छोड़ें

शराब पीना बुरी आदत है। शराब मन को अस्थिर करती है और अस्थिर मन अपने अंदर बुराईयाँ लाता है जबकि आम आदमी इन बुराईयों से बचा रहता है।

जो लोग मीट, अंडे और शराब से बचकर भजन-अभ्यास करते हैं, अंदर जाते हैं वे ही बुराईयों को बाहर निकालकर अपने आपको संभालते हैं।

क्या आप कभी किसी ऐसी माँ से मिले हैं जो अपने बच्चों को ज़हर दे दे? मीट, अंडे और शराब ज़हर हैं। जो इनका सेवन करता है वह भुगतता है। आप अंदर जाएं और अपनी आँखों से

देखें कि इन चीज़ों का सेवन करने वाले को क्या यातनाएं सहनी पड़ती है; चाहे वह नामलेवा है या नामलेवा नहीं है।

इन चीज़ों का इस्तेमाल करने वाले गुरु के नहीं इन्द्रियों के शिष्य हैं। उनका ध्यान इन्द्रियों के मंडल पर काम करता है। ऐसे लोग अध्यात्मिकता की तरक्की के रास्ते में अपने साथ धोखा कर रहे हैं। अंदरूनी गुरु के आगे छोटी सी प्रार्थना करना भी बहुत बड़ा धोखा है; अंदरूनी गुरु इतनी आसानी से नहीं मिलता। यह सच है कि अंदरूनी गुरु दयावान है लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम गलत काम करके सजा से बच जाएंगे।

सन्त अपने नामलेवा को काल के सुपुर्द नहीं होने देते। नामलेवा को भी अपने कर्मों का भुगतान करना पड़ता है। कर्मों का भुगतान करके ही हम तीसरे तिल पर पहुँच सकते हैं।

एक बार मैं मजीठा रोड अमृतसर में अपनी कार से सतसंग देने के लिए जा रहा था। उस दिन सक्रांत की वजह से सड़क पर बहुत भीड़ थी। लोग सतसंग सुनने के लिए जा रहे थे। लोग कारों, ताँगो, साईकिलों, रिक्शा और पैदल चलकर सतसंग घर जा रहे थे। सतसंग घर से थोड़ा पहले मोड़ पर अचानक एक आदमी हमारी कार के आगे गिर गया। ड्राईवर ने कार रोकी, मैं यह देखने के लिए नीचे उतरा कि क्या हुआ है?

एक शराब पिया हुआ आदमी हमारी कार के आगे गिर गया लेकिन किस्मत से उसे कोई चोट नहीं लगी वह बच गया। मैंने उसके दूसरे शराबी साथी की मदद से उसे उठाने की कोशिश की लेकिन उसने इतनी शराब पी हुई थी कि वह सीधा खड़ा नहीं हो पा रहा था। इतनी देर में वहाँ बहुत सतसंगी इकट्ठे हो गए उन्होंने उस शराबी को रास्ते से हटाने में मदद की।

उस शराबी ने वहाँ खड़े लोगों से पूछा कि कार में वह सरदार कौन था? महान गुरु का प्रभावशाली चेहरा उस शराबी देहाती पर अपनी छाप छोड़ गया जबकि वह पूरी होश में नहीं था। उसका साथी जो आधे नशे में था उसने सुना कि वहाँ खड़े हुए लोग कह रहे थे कि वह भगवान है; वह धरती पर पापियों को बचाने के लिए आया है।

उस शराबी ने कहा कि वह परमात्मा लगते हैं, मुझे अपने पापों की माफी के लिए उनके पास जाना है। कुछ देर बाद वह जेब में शराब की आधी बोतल लेकर अपने साथी का सहारा लेते हुए सतसंग घर पहुँच गया।

महाराज सावन सिंह जी कुर्सी पर बैठे हुए आराम कर रहे थे। जब उन्होंने उस आदमी की तरफ ध्यान दिया कि यह वही आदमी है इतनी ही देर में वह महाराज जी के कदमों में गिर गया और उसने अपने दोनों हाथों से महान सतगुरु के पैरों को पकड़ लिया और अपना सिर उनके कदमों में रखकर प्रार्थना करने लगा, ''आप भगवान हैं, आप मेरे पाप माफ कर दें।''

महाराज सावन सिंह जी ने अपने आपको उसकी पकड़ से छुड़वाते हुए कहा, ''मेरे बेटे! मैं भगवान नहीं। मैं भी तुम्हारी तरह एक पापी हूँ।'' देहाती ने कहा, ''मैं तब तक नहीं उठूंगा जब तक आप यह नहीं कह देते कि आपने मुझे माफ कर दिया है।'' महाराज जी न चाहते हुए भी हँस पड़े और वह हँसी माफी ही थी।

महाराज जी के सेवक मनोहर और जमादार प्रताप सिंह ने उस देहाती को हटाना चाहा लेकिन महान गुरु ने उन्हें ऐसा करने से रोका। महाराज जी ने मुस्कुराते हुए कहा, ''यह जबरदस्ती माफी लेने का अजीब तरीका है।''

देहाती पियक्कड़ बुरी तरह से रोकर कहने लगा, ''आप जो चाहे कहें लेकिन मैं आपके पाँव तब तक नहीं छोड़ूंगा जब तक आप मुझे माफ नहीं करेंगे।'' महाराज जी ने अपने दोनों हाथ उसके सिर पर रखकर कहा, ''मेरे बेटे उठो! मैंने तुम्हें माफ कर दिया है।'' देहाती ने महाराज जी के पाँव से अपना सिर उठाते हुए पूछा, ''क्या मेरे सारे पाप माफ कर दिए गए हैं, मैं नर्क की आग से बच गया हूँ?'' महाराज जी ने कहा, ''हाँ! तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें बचा लिया है।''

शाम को वह देहाती 'नामदान' लेने वालों की लाईन में खड़ा हुआ था। कुछ प्रेमियों को नामदान के लिए मना कर दिया गया था लेकिन वह उन लोगों में से था जिन्हें नामदान के लिए स्वीकार कर लिया गया था। महाराज जी ने कहा कि अब तुम शराब और माँसाहार का इस्तेमाल नहीं करोगे।

देहाती ने कहा कि शराब छोड़ना मेरे लिए नामुमकिन है। महाराज जी ने कहा, ''तुम यह वायदा करो कि तुम मेरे सामने शराब नहीं पिओगे।'' देहाती ने कहा, ''मैं यह वायदा करता हूँ।'' महाराज जी ने पूछा, ''तुम अपनी रोजी-रोटी कैसे कमाते हो?'' देहाती ने कहा, ''मेरा नाम गंगू है। मैं चोरी और डाका डालकर रोजी-रोटी कमाता हूँ।''

महाराज जी ने कहा, ''तुम्हें यह काम छोड़कर कोई और काम ढूँढ़ना होगा।'' गंगू ने कहा कि मैं कोई और काम करना नहीं जानता। महाराज जी ने जोर देकर कहा, ''तुम्हें 'नाम' मिल चुका है, अब तुम्हें किसी दूसरे तरीके से अपनी रोजी-रोटी कमानी होगी।'' गंगू ने कहा कि मैं कोई काम नहीं जानता मैंने अपने जीवन में कोई और काम किया ही नहीं।

महाराज जी ने कहा, ''ठीक है ! तुम मुझसे यह वायदा करो कि तुम्हें जितना चाहिए उतना ही चुराओगे और चोरी करते हुए किसी को अपने साथ लेकर नहीं जाओगे।'' गंगू ने कहा कि मैं दिल से आपके साथ वायदा करता हूँ। जाने से पहले वह फिर महाराज जी के पैरो में गिर गया। महाराज जी ने अपने दोनों हाथ उसके सिर पर रखकर उसे आशिर्वाद दिया। उसके बाद उसने सिर्फ एक बार ही चोरी की।

'नाम' लेने के बाद वह गुरदासपुर के एक गाँव में किसी रिश्तेदार की शादी में गया, वहाँ उसके पास पैसे कम पड़ गए। रात को उसने एक महाजन की तिजोरी तोड़ी और जैसे ही नोटो का बंडल उठाया उस तिजोरी के ऊपर का भारी ढक्कन उसकी बाजू पर गिर गया जिससे उसे बहुत ज्यादा चोट लगी और उसकी बाजू तिजोरी में फँस गई। उसकी सारी चालाकी और चतुराई हाथ निकालने में नाकामयाब रही।

वह जब हार गया तो सतगुरु उसके सामने प्रकट हुए उसकी बाजू को छुड़वाने के लिए मदद की और उससे कहा, ''क्या तुमने मुझसे यह वायदा नहीं किया था कि तुम्हें जितना चाहिए उससे ज्यादा नहीं चुराओगे? अब तुम अपनी जिंदगी बचाने के लिए सब कुछ छोड़कर यहाँ से भाग जाओ।'' उसके बाद गंगू ने दोबारा कभी चोरी नहीं की।

जैसे ही वह अपने गाँव पहुँचा उसके साथियों ने उसे रात को शराब की दावत में आने के लिए कहा। गंगू ने मना कर दिया। उसके साथियों ने कहा कि हमने जश्न मनाने का फैसला किया है कि तुम एक सन्त से मिले हो जिसने बदकिस्मती से तुम्हे नर्क की अग्नि से बचाया है। उसके साथियों ने शराब की

बोतले खोली और उसे शराब पीने के लिए कहा लेकिन गंगू ने हाथ जोड़कर उनसे नम्रता पूर्वक माफी माँगी।

गंगू का एक साथी बलवंत सिंह कमांड के दूसरे स्थान पर था। उसने गिरोह की कमांड अपने हाथ में ले ली और कहा कि उनका कमांडर अपने होश में नहीं है; अब वह उसकी जगह काम करेगा। गंगू को चेतावनी दी गई। उसकी टाँगे और हाथ दूसरे अफसरो ने पकड़ लिए और उसे जमीन पर सीधा लिटा दिया कि अब नया कमांडर उसके मुँह में शराब डालेगा।

सबने शराब से अपने-अपने जग भरकर शोर किया कि कौन मरता है जब तक शराब जिंदा है। जैसे ही गंगू ने शराब का जग उठाया तो उसने महान गुरु को अपने सामने देखा। महान गुरु ने कहा, ''मेरे बेटे ! याद करो अगर तुम अपना वायदा तोड़ोगे तो मैं अपनी माफी भी वापिस ले लूंगा।'' उसने उसी समय अपना शराब से भरा हुआ जग दूसरे कमांडर के मुँह पर फैंका और दरवाजे को पटकता हुआ कमरे से बाहर चला गया।

गंगू जल्दी ही बंदूक लेकर वापिस आया और उसने कहा, ''तुम सब लोग जानते हो कि मैं तेज निशानेबाज हूँ और यह भी जानते हो कि मेरा कहना न मानने पर मैं कितनी बुरी तरह से सबको मार सकता हूँ। सब जहाँ बैठे हो वहीं बैठे रहो और मेरी बात को ध्यान से सुनो; जो जरा भी हिला उसकी मौत हो जाएगी।''

उसके दूसरे कमांडर ने बोलना शुरू किया, ''सरदार!'' गंगू ने गरजकर कहा कि कोई सरदार नहीं और बलवंत सिंह पर निशाना साधा। उस समय सारे गिरोह ने चुप्पी साध ली फिर उसने कहा, ''मेरे भाईओ सुनो! मैं सतगुरु के संपर्क में आ

चुका हूँ, सतगुरु ने एक ही नज़र मे मेरे जीवन को बदल दिया है। मैंने अपने सतगुरु से वायदा किया है कि मैं कभी शराब नहीं पिऊंगा और कोई गुनाह नहीं करूंगा।

आज रात हमारा गिरोह टूट रहा है अब हम कोई गुनाह नहीं करेंगे। मेरी तिजोरी की चाबियां ले लो और तिजोरी में पड़ा हुआ सारा पैसा आपस में बाँट लो। तुम सबको लगभग पाँच हजार रूपये मिल जाएंगे जिससे तुम अपनी पसंद का कोई धंधा शुरू कर सकते हो। मुझे तुममे से किसी में भी लीडर के गुण दिखाई नहीं देते। तुम लोग किसी बड़े शहर में जाकर बस जाओ। तुम आसानी से अपना नया जीवन शुरू कर सकते हो अगर तुममे से कोई गिरफ्तार होता है तो मैं देखूंगा कि तुम्हारी रक्षा हो सके और तुम बच जाओ।''

अब मैंने बुरे काम छोड़ दिए हैं। सबने कहा कि सरदार हम आपके बिना नहीं रह सकेंगे; हम सब भाईओं की तरह रहेंगे। अब हम चोरों, गुनाहगारो वाला कोई बुरा काम नहीं करेंगे।

गंगू ने कहा, ''मैं एक दोषी हूँ। पुलिस मेरे पीछे है और मैं जानता हूँ कि मैं किसी भी दिन पकड़ा जाऊंगा। तुम सब मुझसे दूर रहने की कोशिश करो। मेरे साथ रहने से तुम्हारा भला नहीं होगा। मैं आखिर में तुम्हें बताता हूँ अगर तुम कभी ब्यास जाओ तो वहाँ रहने वाले सन्त के दर्शन जरूर करना। अगर तुममे से कोई पुलिस में जाकर मेरे खिलाफ बताएगा तो मुझे बुरा नहीं लगेगा लेकिन तुम पर मुझसे ज्यादा मुसीबत आएगी।''

उसने यह सब कहकर चाबियों का गुच्छा अपने साथियों पर फैंक दिया। गंगू ने अपने दोनों हाथ जोड़कर अपने साथियों को शुभ रात्रि और अलविदा कहा।

***

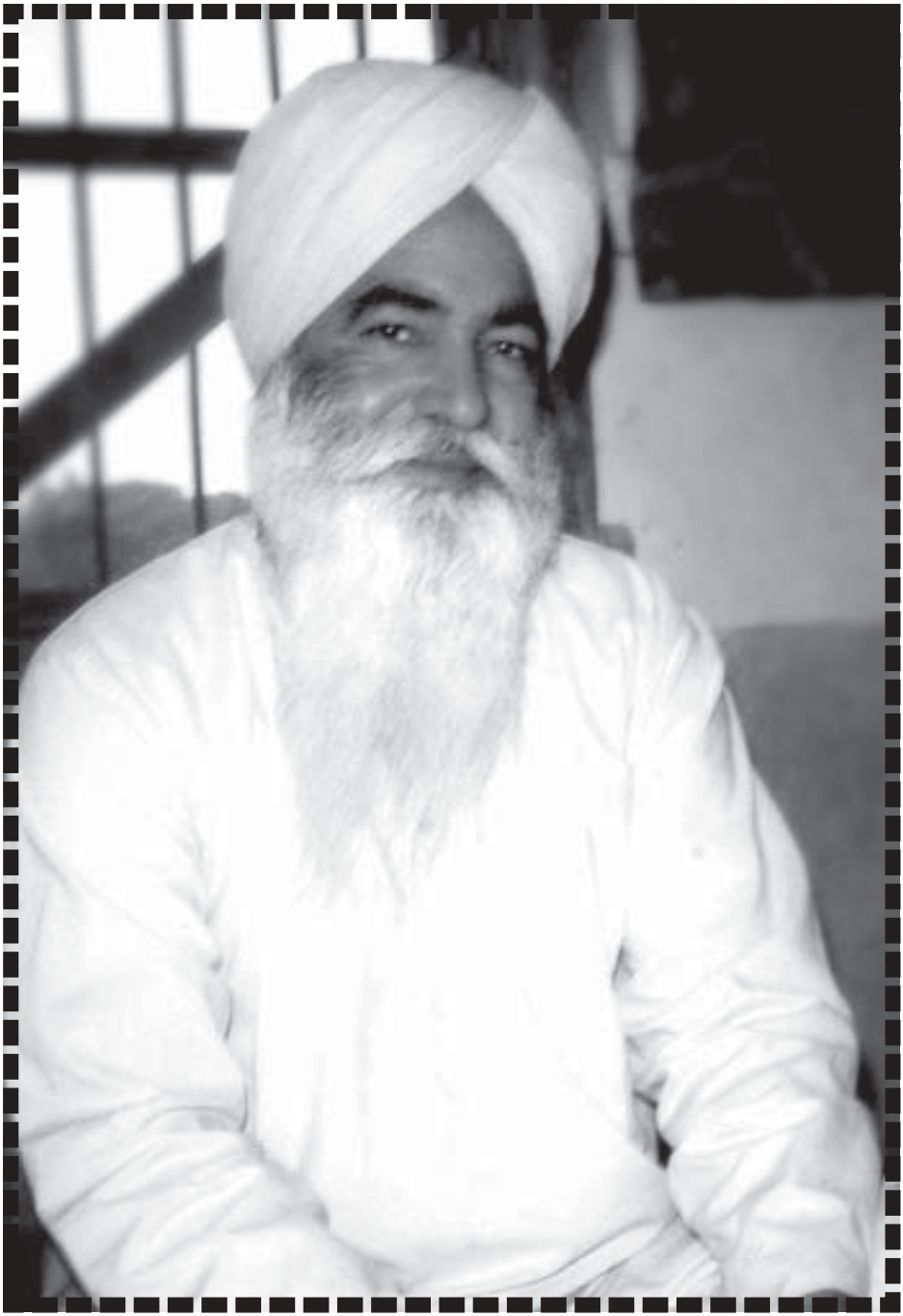

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

असल-नकल

वारां - भाई गुरदास जी

बैंगलोर

आज आपके आगे भाई गुरदास जी की 36वीं वार रखी जा रही है, यह बानी सुनने लायक है इसे ध्यान से सुनें। भाई गुरदास जी गुरु अमरदेव जी के भाई के बेटे थे। आप ब्रह्मज्ञानी और सच्चे-सुच्चे थे। आपको गुरु अमरदेव, गुरु रामदास, गुरु अर्जुनदेव और गुरु हरगोबिंद के चरणों में बैठने का और भजन-अभ्यास का मौका मिला था। आपने इन चारों गुरुओं की बहुत सेवा की। आपने ईमानदारी से रोजी-रोटी कमाकर अपनी जिंदगी का निर्वाह किया। आप सन्तमार्ग में पूर्ण सतसंगी की मिसाल थे।

जिस समय भाई गुरदास ने सन्तमत का उपदेश दिया उस समय भारत में आने-जाने के साधन नहीं थे। बहुत से प्रेमी आपकी संगत में आए। आपने लगभग सात-आठ सौ प्रेमियों को सतगुरु से नाम दिलवाया। आपने कई गुरु गद्दियों की तबदीली होते देखी। आपको **असल-नकल** का पूरा ज्ञान था किस तरह लोग असल को नकल बना लेते हैं।

जब गुरु रामदास चोला छोड़कर सच्चखंड चले गए उस समय आप आगरा में थे। गुरु रामदास जी के संसार से विदा लेते ही आप अमृतसर आ गए। आपने अमृतसर में वह शान नहीं देखी जो गुरु रामदास जी के समय में थी। आपने अपने भांजे अर्जुनदेव से पूछा, ''क्यों भई ! ऐसी हालत क्यों है संगत क्यों बिखरी हुई है ?'' अर्जुनदेव ने आपको सारी बातें समझाई कि पृथ्वीचंद संगत में फितूर मचा रहा है उसने गुरु बनने का ऐलान कर दिया है

भाई गुरदास अच्छी तरह जानते थे कि गुरु गद्दी मान-बड़ाई प्राप्त करने के लिए नहीं होती यह कोई व्यापार नहीं। गुरु गद्दी

बहुत जिम्मेदार व्यक्ति के लिए होती है जो रूहों का उद्धार कर सकता हो और जिसके अंदर सतपुरुष प्रकट हो।

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''सतगुरु किसी परिवार, किसी जगह या किसी जाति से बंधे नहीं होते। उन्हें सारे संसार से सहानुभूति होती है। उनमें सभी आत्माओं के लिए दया होती है।''

महाराज कृपाल 25 साल तक यही होका देते रहे कि रूहानियत वसीयतों द्वारा नहीं दी जा सकती। रूहानियत केवल आँखों से दी जाती है। आपके चोला छोड़ने के बाद लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया कि सतगुरु ने मुझे आँखो द्वारा अपनी ताकत दी है।

प्यारेयो! ऐसी आँखे बनाना आसान नहीं जो सतगुरु से रूहानियत प्राप्त कर सके। हम सुनते आए हैं कि शेरनी का दूध रखने के लिए सोने के बर्तन की जरूरत होती है अगर शेरनी का दूध दूसरे बर्तन में रखेंगे तो वह खराब हो जाएगा। ऐसी आँखें बनाने में कई जन्म लग जाते हैं। आप यह भजन पढ़ते हैं:

ओ अक्ल के अंधे देख जरा, तैनूं सतगुरु दितियां अंखियां ने।
हर कदम ते ठोकर खाना ऐं, ऐहे अक्खियां कास नूं रखियां ने।
कई मारे मर गए अक्खियां दे, कई तारे तर गए अक्खियां दे।
ऐ ज़हर ते अमृत अक्खियां विच, ऐ रमजां किसने लिखियां ने।

अगर आँखें विषय-विकारों की तरफ चली जाएं! जिंदगी बर्बाद हो जाती है अगर यही आँखें नाम के रसिए सन्त से मिल जाएं तो हम इस संसार समुंद्र से तर जाते हैं।

इक अख कोडी दे मुल दी ऐ, इक अख मोती नाल तुलदी ऐ,
इक अख दे वैरी हजारां ने, इक अख दिया लक्खां सखियां ने।

प्यारेयो! एक आँख मोती के बराबर होती है और एक आँख का मूल्य कौड़ी भी नहीं होता। एक आँख की लाखों सखियाँ होती हैं और एक आँख के अनेकों ही वैरी होते हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी की माता बीबी भानी ने भाई गुरदास को पृथ्वीचंद के पास भेजा कि वे उसे समझाएं कि भाइयों में गद्दी के लिए झगड़ा अच्छा नहीं। इससे संगत का बहुत नुकसान हो रहा है, किसी का आत्मघात करना अच्छा नहीं। भाई गुरदास ने पृथ्वीचंद को हर तरह से समझाया, ''तूने कमाई नहीं की, यह कमाई वाले की वस्तु है; तू कमाई कर कामयाब हो जाएगा।''

सन्त बेलिहाज ताकत होते हैं, वे किसी परिवार का लिहाज नहीं करते संगत ही उनका परिवार होती है। भाई गुरदास ने पृथ्वीचंद को समझाया अगर तुझे गद्दी प्राप्त करनी थी तो तू कमाई करता लेकिन पृथ्वीचंद गद्दी छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुआ। भाई गुरदास पृथ्वीचंद को मींसणा(कपटी) कहकर बयान करते हैं।

हम जानते हैं कि कमाई करना बहुत मुश्किल है। पृथ्वीचंद के दिल में ईर्ष्या, क्रोध और कपट था। वह अपने जोर से ही गद्दी प्राप्त करना चाहता था।

सिक्खों का इतिहास इस कहानी से भरा हुआ है। जब पृथ्वीचंद को गद्दी नहीं मिली तो उसने अपने भाई महादेव को भी अपने साथ मिला लिया। गुरु अर्जुनदेव जी के खिलाफ षड्यंत्र रचे। पृथ्वीचंद ने उस समय की हुकूमत के साथ मिलकर गुरु अर्जुनदेव जी को गर्म तवे पर बिठवाया, आपका घरबार लूट लिया।

जब भाई गुरदास पृथ्वीचंद को समझाने में कामयाब नहीं हुए तो उनके दिल पर इस बात का बहुत असर हुआ। उन्होंने सोचा कि यह रूहानियत को खेल समझता है। आपके आगे वह वार रखी जा रही है जो उस समय भाई गुरदास ने हालात को देखकर लिखी थी।

दक्षिणी पंजाब में एक कौम है जिसे *मींणा* और *जरांदपेशा* भी कहते हैं। इस कौम के लोग अपने साथी को भी लूट लेते हैं। इसका

असली अर्थ मींसणां होता है। मींसणां-अंदर से कुछ और, बाहर से कुछ और होता है इनके दिल में कपट होता है। ये बाहर से बगुले की तरह भक्त बनकर दिखाते हैं।

तीरथ मंझि निवासु है बगुला अपतीणा॥

भाई गुरदास जी बगुले की मिसाल देकर समझाते हैं, ''बगुले का निवास मानसरोवर-तीर्थ पर है लेकिन वह कपटी यह नहीं जानता कि यहाँ पाप नहीं करना चाहिए। वह वहाँ भी मछलियाँ चुग-चुगकर खाता है।''

आप कहते हैं कि जो लोग सन्तों के पास रहते हैं और उनके परिवार में भी आ जाते हैं; ऐसे लोग बगुले की तरह ही हैं। ऐसे लोग दुनिया को बनकर तो दिखाते हैं लेकिन भजन-सिमरन नहीं करते। ऐसे लोग नहीं जानते कि सन्तों का दरबार सच्चा सुच्चा है, यहाँ पाप करना, भोग भोगना ठीक नहीं।

लवै बबीहा वरसदै जल जाइ न पीणा॥

आप कहते हैं, ''बारिश हर किसी के लिए बरसती है लेकिन पपीहा बारिश के पानी को नहीं पीता, अपने प्यारे की रट लगाए रखता है। इसी तरह पुत्र, भाई, भतीजा, स्त्री कोई भी सन्त-सतगुरु की सेवा करे! उनकी आज्ञा का पालन करे! सतगुरु उनके काम सँवारते हैं लेकिन ये लोग पपीहे की तरह प्यासे ही रह जाते हैं।''

वाँसु सुगंधि न होवई परमल संगि लीणा॥

बाँस अपनी बड़ाई में ही खड़ा रहता है कि मैं ऊँचा हूँ उसके नजदीक चंदन का पेड़ है, वह उसकी सुगन्ध कबूल नहीं करता।

घुघू सुझु न सुझई करमा दा हीणा॥

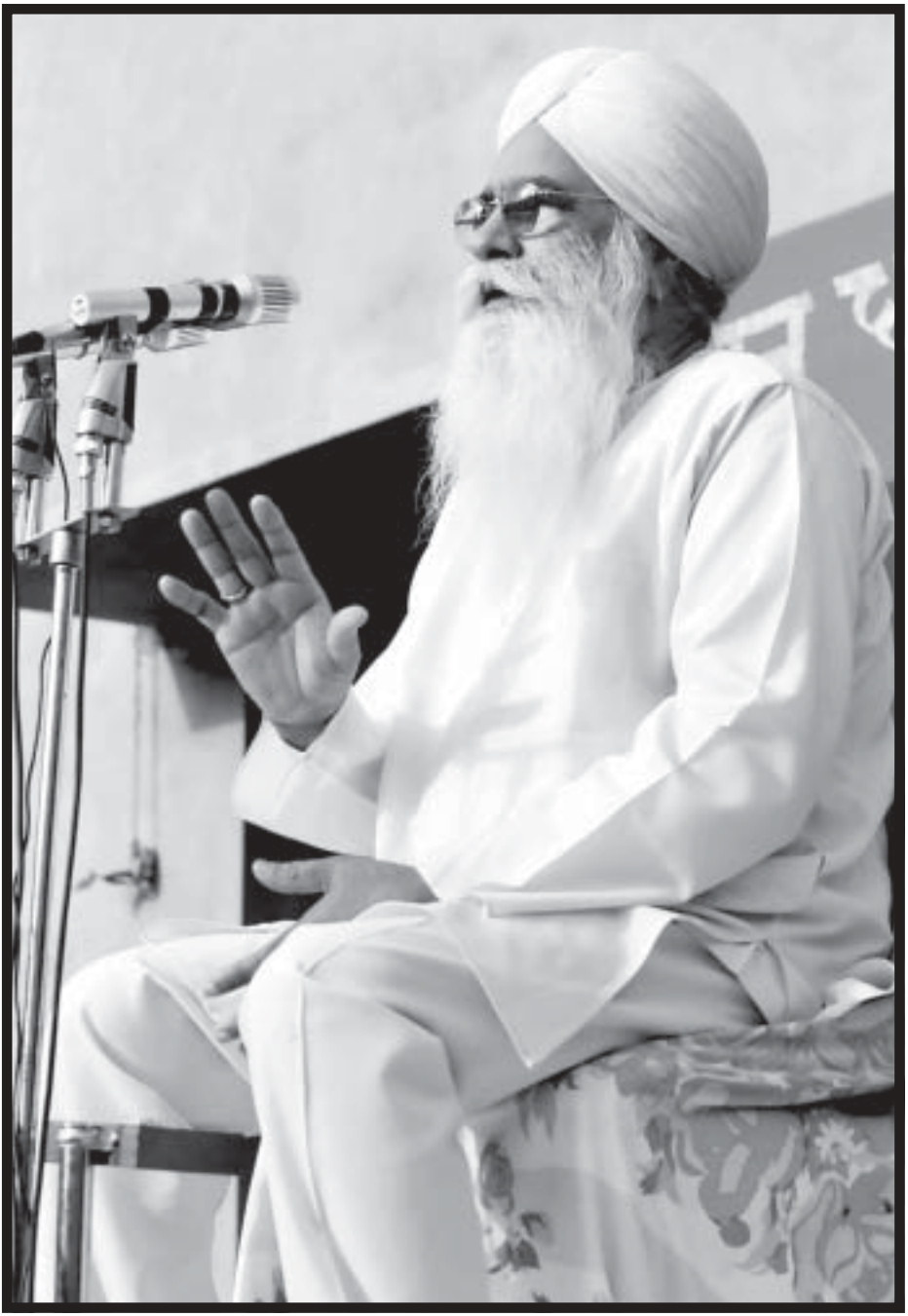

सूरज हर जगह प्रकाश करता है लेकिन उल्लू उस प्रकाश को कबूल नहीं करता क्योंकि उल्लू के कर्मों में प्रकाश है ही नहीं।

नाभि कथूरी मिरग दे वतै ओडीणा॥

आप कहते हैं, ''मृग की नाभि में कस्तूरी है लेकिन वह कस्तूरी की खोज बाहर करता है, भटकता रहता है।''

सतिगुर सचा पातिसाहु मुहु कालै मीणा॥

आप कहते हैं कि सतगुरु को परमात्मा ने दरगाह से ही पातशाही बख्शी होती है। आखिर मीणे-मीसणें (कपटी) का मुँह दरगाह में जाकर काला होता है। सच आखिर सच ही रहता है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सच पर खड़े रहो परमात्मा आपकी मदद करेगा।''

नीलारी दे भट विचि पै गिदड़ु रता।
जंगल अंदरि जाइ कै पाखंडु कमता।
दरि सेवै मिरगावली होइ बहै अवता।
करै हकूमति अगली कूड़ै मदि मता।
बोलणि पाज उघाड़िआ जिउ मूली पता।
तिउ दरगाहि मीणा मारीऐ करि कूड़ु कुपता॥

भाई गुरदास जी कहते हैं कि जैसे गीदड़ रंगरेज के घड़े में गिरकर रंगा गया। वह जंगल में गया, वहाँ हिरण घूम रहे थे। हिरणों ने सोचा! हमने ऐसा जानवर पहले देखा ही नहीं, कहीं यह जंगल का बादशाह न हो! उन्होंने गीदड़ के आगे नमस्कार किया तो गीदड़ अकड़कर बैठ गया कि शायद मुझमें कोई गुण है; मैं ताकतवर हूँ। जब रात को गीदड़ अपनी भाषा में *हो-हो* बोले तो वह भी उसी भाषा में बोलने लगा। इस तरह उसके पाखंड का राज़ खत्म हो गया। हिरणों ने उस गीदड़ को मारकर भगा दिया।

कहावत है अगर एक गीदड़ बोले और दूसरे गीदड़ न बोलें तो उन्हें खारिश हो जाती है। जिस तरह मूली खाने से गंदा डकार आता है, पता लग जाता है कि इसने मूली खाई है। इसी तरह *मनमुख* दरगाह में जाकर झूठा हो जाता है।

चोरु करै नित चोरीआ ओड़कि दुख भारी।
नकु कंनु फड़ि वढीऐ रावै पर नारी।
अउघट रुधे मिरग जिउ वितुहारि जूआरी।
लंडी कुहलि न आवई पर वेलि पिआरी।
वग न होवनि कुतीआ मीणे मुरदारी।
पापहु मूलि न तगीऐ होइ अंति खुआरी॥

आप कहते हैं कि चोर चोरी करता है, उसे पुलिस पकड़ लेती है। पिछले समय में चोर को बहुत कड़ी सजा मिलती थी। मैं जिस इलाके में रहता हूँ वहाँ का राजा गंगासिंह था। वह चोर की टाँग कटवा देता था ताकि चोर चोरी न कर सके। जैसे लंगड़ी स्त्री ठीक ढ़ंग से चल नहीं सकती; वही हालत कपटी ठग की होती है। उसी तरह हिरण जाल में फँसकर पछताता है।

इसी तरह आप कहते हैं कि जैसे जुआरी अपना सब कुछ हारकर चला जाता है। उसी तरह *मीणें* की दरगाह में इज्ज़त नहीं होती और जो उसके पीछे लगे होते हैं उनकी भी इज्ज़त नहीं होती। वह सच्ची संगत नहीं बना सकता।

बेशक यह वार भाई गुरदास जी ने पृथ्वीचंद की तरफ इशारा देकर लिखी है लेकिन इससे हम सबको शिक्षा मिलती है अगर कोई धोखे से हमें अपने पीछे लगाता है तो वह खुद भी ख्वार होगा और उसके पीछे लगने वाले भी ख्वार होंगे। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुरु जिन्हां का अंधला, सिक्ख वी अंधे कर्म करेंण,
ओह चल्लण भांणे आपणें, नित झूठो झूठ बुलेंण।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''पहले महात्मा कमाई करके बनते थे लेकिन आजकल महात्मा पार्टियों के जोर पर बनते हैं।'' सन्तों ने अपनी बानियों में कहा है कि जो खुदा के नज़दीक हो जाते हैं वे और खुदा एक हो जाते हैं। वे किसी से यह नहीं कहते कि हम खुदा हो गए हैं। फरीद साहब कहते हैं:

सब्र अंदर साबरी, तन ऐवें जलैंण,
होंण नजीक खुदाए दे, भेद न किसे दैंण।

लेकिन आजकल यह रिवाज हो गया है कि लोग अखबारों में इश्तिहार निकलवाते हैं कि हम पूरे हैं, हम ही उत्तराधिकारी हैं। महात्मा बताते हैं कि यह कोई बाजार का सौदा नहीं है।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे कि महात्मा के अंदर यह ताकत होती है कि किसे नज़दीक लाना है, किसे दूर करना है? एक महात्मा के लिए दूर और नज़दीक का कोई फर्क नहीं पड़ता। ऐसे अनेकों वाक्यात मिलते हैं जिन्होंने पहले देखा ही नहीं होता वे आकर बताते हैं कि हमें सपने में या प्रत्यक्ष रूप में इस तरह की जानकारी मिली कि मैं उस जगह प्रगट हूँ।

इतिहास अपने आपको दोहराता है। जब दिल्ली में संगत ने गुरु हरिकृष्ण से पूछा कि आपके बाद हम किसे मानें? आपने इतना ही कहा, ''बाबा बकाले।'' आपके इतना कहते ही आपके परिवार के सारे सोढ़ी गुरु बनकर बैठ गए। उन्होंने बाईस गद्दियाँ बना ली। हरेक ने प्रचार करने के लिए अपने-अपने लोग छोड़ दिए कि यही पूरा गुरु है।

सन्तों का अपने आपको जाहिर करने का एक जरिया होता है, यह कोई करामात नहीं होती। मक्खनशाह लुभाणां व्यापार करता था। रास्ते में उसका जहाज डूबने लगा तो उसने प्रार्थना की कि इस समय जो ताकत है वह मेरी रक्षा करे! मैं उस ताकत को पाँच सौ

सोने की मोहरे सेवा में दूँगा। मक्खनशाह लुभाणा का जहाज सुरक्षित किनारे लग गया।

मक्खनशाह लुभाणा को किसी से पता लगा कि गुरु नानक की ताकत दिल्ली में काम कर रही है। जब मक्खनशाह दिल्ली पहुँचा तो उसे पता लगा कि गुरु हरिकृष्ण चोला छोड़ गए हैं और गुरु गद्दी बकाला में हैं। वह बकाला गया उसने देखा कि वहाँ बाईस गुरु बनकर बैठे हुए थे सब यही कह रहे थे कि हम ही गुरु हैं। अब वह कशमकश में पड़ गया कि मैं सभी के आगे थोड़ी-थोड़ी मोहरों का मत्था टेक देता हूँ जो पूरा गुरु होगा वह अपने आप ही बता देगा। अंत में मक्खनशाह ने पूछा कि मैं बाईस गुरुओं को तो मत्था टेक चुका हूँ क्या कोई और गुरु भी है?

उस समय गुरु तेगबहादुर को तेगा कमला कहते थे। आप जमीन के अंदर गुफा बनाकर अभ्यास कर रहे थे। किसी ने मक्खनशाह से कहा कि जमीन के नीचे एक तेगा कमला अभ्यास कर रहा है।

मक्खनशाह ने नीचे जाकर उनके आगे भी थोड़ी सी मोहरें रखकर मत्था टेक दिया। गुरु तेगबहादुर ने अपने कंधे पर चुभे हुए कील दिखाकर कहा, ''देख भाई प्यारेया! तूने लंगर के लिए ज्यादा मोहरें देने की मन्नत मानी थी लेकिन तू कम मोहरें दे रहा है।'' सन्त माया के भूखे नहीं होते। उन्होंने यह बात अपने आपको जाहिर करने के लिए कही। खुशी में आकर मक्खनशाह लुभाणा ने कोठे पर चढ़कर कहा, ''गुरु लादो रे! गुरु लादो रे!''

मक्खनशाह लुभाणा गुरु तेगबहादुर जी को बाहर ले आया और उसने कहा, ''बहुत अफसोस की बात है जो लोग 'शब्द-नाम' की कमाई नहीं करते, वे गद्दियों पर बैठकर मजे कर रहे हैं और कमाई वाला महात्मा जमीन के अंदर बैठा है।'' गुरु तेगबहादुर जी के लिए स्टेज लगाई गई कि संगत आपके दर्शन कर सके। धीरमल ने आपके

ऊपर गोली चलाई, आप बाल-बाल बच गए। आपके गुरुदेव ने आपकी रक्षा की। धीरमल के विरोध की वजह से आप असम चले गए।

किसी वक्त महात्माओं ने अमृतसर में सतसंग किया था, 'नाम' का प्रचार किया था। अमृतसर गुरु अर्जुनदेव जी की जगह थी जहाँ गुरु हरगोबिंद ने अपना काफी समय बिताया था। गुरु तेगबहादुर के दिल में अमृतसर देखने का ख्याल आया। पृथ्वीचंद की औलाद ने आपको अमृतसर के अंदर दाखिल नहीं होने दिया, बाहर ही रोक दिया। गुरु तेगबहादुर ने पूछा, ''आप कौन हैं?'' उन्होंने कहा, ''हम अमृतसरिए हैं।'' गुरु तेगबहादुर जी ने कहा, ''तुम लोग अमृतसरिए नहीं, अंदरसड़िए हो।'' सिक्ख इतिहास में आता है कि आप बाहर से ही वापिस लौट आए थे।

आप सोचकर देखें! लोग कमाई वालों को उनकी जगह पर भी नहीं आने देते, उनसे बुरा बर्ताव करते हैं लेकिन महात्मा सबके साथ प्यार करते हैं, सबके साथ बैठकर खुश होते हैं।

शुरू में रसल पर्किन्स और कुलवन्त बग्गा बहुत कठिनाइयों का सामना करके मेरे पास पहुँचे। उस समय मैं जिस जगह पर रह रहा था वह जगह गंगानगर से सत्तर किलोमीटर की दूरी पर है। मैंने यह कहलवा रखा था कि कोई भी मेरे पास न आए।

जब महाराज कृपाल सिंह जी संसार से सच्चखंड चले गए उस समय पार्टियों वाले संगत बनाने के लिए काफी जोर लगा रहे थे। सब यही चाहते थे कि हम पश्चिम के लोगों की ज्यादा संख्या दिखाएं।

जब रसल पर्किन्स दिल्ली आया तो उसका बहुत स्वागत किया गया। उसे यह भी पता चला कि हिन्दुस्तान में एक फकीर है जो किसी से मिलकर खुश नहीं होता लेकिन उसने हिम्मत नहीं छोड़ी। उसे लगता था कि पता नहीं कब यह फकीर हमें यहाँ से वापिस भेज दें। जब पश्चिम की संगत ने बहुत प्यार दिखाया तो मैंने रसल पर्किन्स

से तीन-चार बातों का वायदा लिया कि कोई मुझे महाराज न कहे! महाराज तो कृपाल सिंह जी ही थे। आप सतपुरुष थे। ये मेरी खुशकिस्मती और आपकी दया थी कि मैं आपको पहचान सका। हमने किसी की निन्दा नहीं करनी, चाहे कोई हमारी कितनी ही निन्दा करता रहे। अखबारों में कोई इश्तेहारबाजी नहीं करनी। मुझे खुशी है कि रसल पर्किन्स ने इन बातों पर चलने की पूरी तरह कोशिश की।

जब पश्चिम में निन्दा का तूफान उठा, उस समय मैंने रसल पर्किन्स को यही याद दिलाया कि देख प्यारेया! तूने मुझसे वायदा किया है कि हम किसी की निन्दा नहीं करेंगे। महाराज कृपाल ने मुझसे यही कहा था, ''जब बुरा बुराई से नहीं हटता तो भला भलाई से क्यों हटे।''

हमारा काम सबसे प्यार मोहब्बत करना है। जो लोग गुरु के बताए रास्ते से भटक गए हैं, हमने उनके लिए भी प्रार्थना करनी है।

जब तक सन्त-महात्मा शरीर में रहते हैं उनका प्रचार सही ढंग से होता रहता है, सच्चाई चलती रहती है। जब महात्मा संसार से दूर हो जाते हैं उनके ही अनुयायी अपने मतलब के लिए उनकी लेखनियों के गलत मतलब करना शुरू कर देते हैं। सन्तों की बानियों के टीके कस्के कई किस्म के झगड़े खड़े कर लेते हैं।

पूरे गुरु के शिष्यों में 'नाम' की खुशबू होती है। वे किसी की निन्दा नहीं करते, अपनी बुराई की तरफ देखते हैं। अब जमाना ऐसा आ गया है कि गुरु लफ्ज़ बदनाम हो रहा है। शुरू में जब डिक शेनन ने कहा कि गुरुमत बदनाम हो रहा है। लोग एक-दूसरे का मजाक उड़ाकर कहते हैं, ''क्या तुम्हारा भी कोई गुरु है?'' पूरे गुरु के सेवकों को उदाहरण पेश करनी चाहिए, उनके अंदर से नाम की खुशबू आनी चाहिए।

***

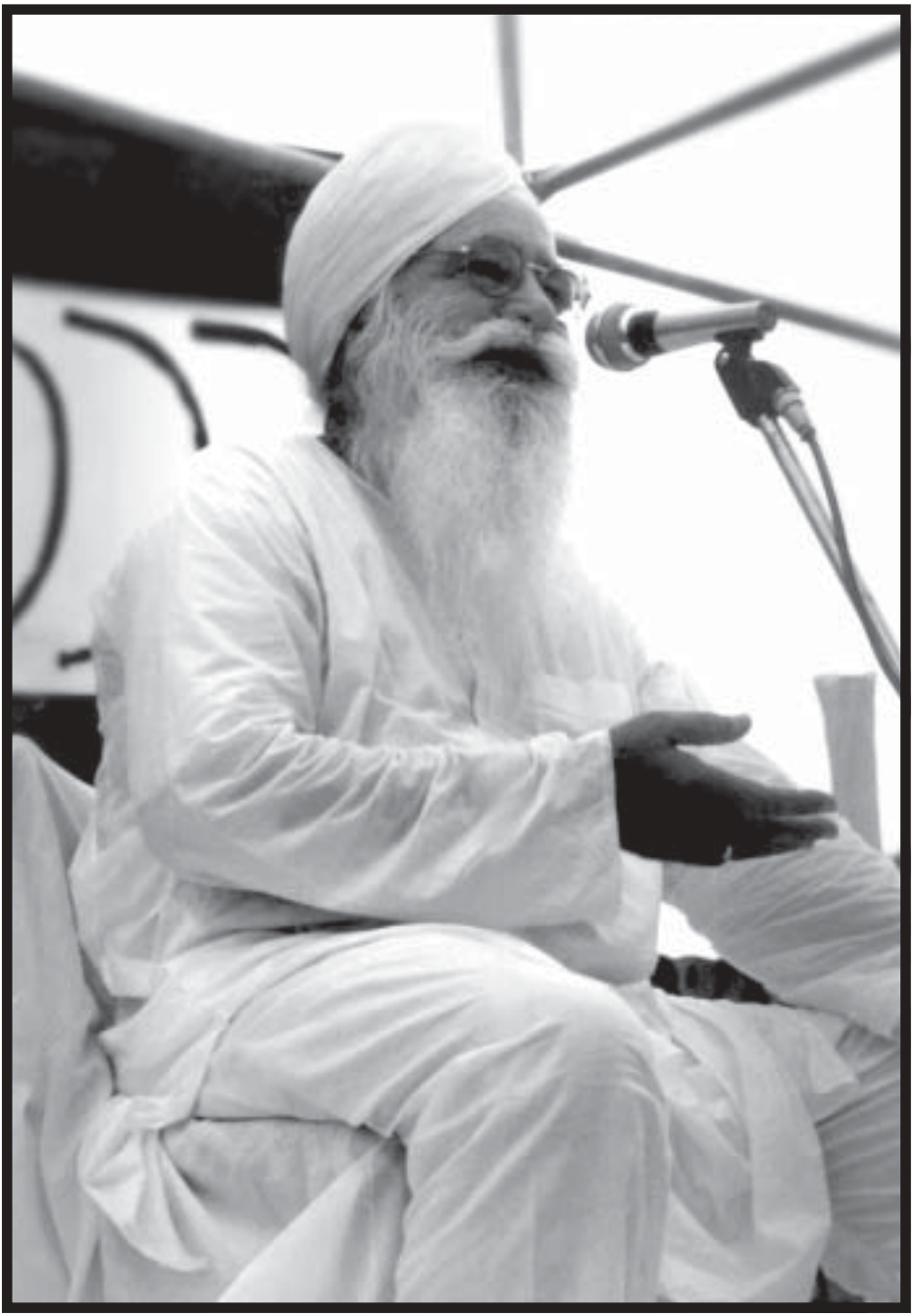

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी *: मैंने अनुराग सागर में पढ़ा है कि काल अद्या से कहता है वह पाप और पुण्य की चिन्ता न करे क्योंकि यह सब उसके ही बनाए हुए हैं, उसे किसी को जवाब नहीं देना पड़ेगा। काल कई तरीकों से आत्माओं को धोखा देता है और वह अपने कानूनों का पालन करने वाला धर्मराज भी खुद है। क्या इस वजह से उसके ऊपर वे कानून लागू नहीं होते जो उसने खुद बनाए हैं? वह आत्माओं को जो दुःख दे रहा है क्या इस बारे में सतपुरुष उससे कुछ नहीं पूछेगा, काल का अंत क्या होगा?*

बाबा जी : हाँ भई! बड़ा दिलचस्प सवाल है इस सवाल पर बहुत कुछ बोला जा सकता है। सबसे पहले तो हम सन्तों की बानी को अंदर जाकर ही समझ सकते हैं अगर हम अंदर जाने के लिए तैयार हों तो सतगुरु हमारी मदद के लिए हर सैकिंड तैयार रहता है। 'शब्द-धुन' अंदर के मंडलों की ताकत है। यह एक-दूसरे मंडल को जोड़ती है अगर हमारी आत्मा शब्द-धुन के साथ जुड़ी रहे तो यह संसार की सभी बातें भूल जाती है लेकिन हमारे मन में ये चीजें हैं कि मेरी पत्नी है। मेरे बच्चे हैं। मेरी जायदाद है। मैं बुद्धिमान हूँ इसलिए हमारी आत्मा 'शब्द-धुन' के साथ जुड़ी नहीं रहती।

हर महात्मा ने इस बारीक रास्ते का जिक्र किया है। किसी महात्मा ने इसे राई का दसवां हिस्सा तो किसी ने इसे बाल का दसवां हिस्सा कहा है। मन को यहाँ लाकर कहें कि तूने इस रास्तें से पार होना है! तू क्यों इतने बोझ अपने सिर पर उठा रहा है? जब मन संघर्ष करता है इसे पता लगता है कि रास्ता बहुत मुश्किल है। मैंने फिजूल बातों का बोझ अपने सिर पर उठाया हुआ है।

शुरू से हमारे माता-पिता ने हमें अभ्यास करवाया कि यह तेरी माता है, यह तेरी बहन है, यह तेरा भाई है, यह तेरा मुल्क है। अभ्यास के द्वारा ही हमें यह सब याद हुआ इसी तरह हम अभ्यास के द्वारा अपनी इस आदत को बदल भी सकते हैं। सतसंगी के दिल के अंदर गुरु पर पूरा भरोसा हो क्योंकि गुरु उस संकरी गली में सेवक की मदद करने के लिए हमेशा ही तैयार होता है।

शिष्य और गुरु का रिश्ता बहुत ही गहरा होता है इसे समझना बहुत मुश्किल होता है। हम जब तक सच्चखंड न पहुँच जाएं गुरु और शिष्य के रिश्ते को समझ नहीं सकते। गुरु का इतना ही काम नहीं कि दो लफ्ज़ बता दिए सेवक उन्हें जपता रहे।

प्यारेयो! गुरु तब तक सेवक का साथ नहीं छोड़ता जब तक उसे उसके घर न पहुँचा दे। हमें गुरु का रिश्ता समझ नहीं आता इसलिए हम उस सच्चे मददगीर को घटिया दर्जे पर लाकर खड़ा कर देते हैं। कोई कहता है, ''मेरा बच्चा बीमार है इसे ठीक करें।'' कोई कहता है, ''मेरा बच्चा रोता है इसे चुप करवाए।'' कोई निर्धन है दुनियावी धन के लिए अरदास करता है।

सोचकर देखें! जिस दुकान पर हीरे-मोती है अगर हम वहाँ जाकर कौड़ियां माँगे तो हम शोभा नहीं पा सकते। जब उस दुकानदार के पास कौड़ियां हैं ही नहीं चाहे आप उसे गालियां निकालें चाहे उससे प्यार करें वह आपको कौड़ियां कहाँ से देगा? अगर आप हीरे-मोती माँगेगे तो मिल जाएंगे। सन्तों का काम 'नाम' देना है। सन्त हमें जन्म-मरण से ऊपर ले जाकर मालिक के साथ मिलाप करवा देते हैं। यही सन्तों की ताकत है, यही सन्तों का प्यार है और यही उनकी रहम दिली है।

गुरु और शिष्य का रिश्ता घर परिवार के सदस्य भी नहीं समझ सकते। बच्चों को यह अहंकार होता है कि हम फलाने सन्त के

बच्चे हैं, वे शरीर पर थोड़ी सी भी धूल नहीं पड़ने देते। अभ्यास करने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता। गुरु नानक साहब का इतिहास पढ़कर देखें! क्या उनके बच्चों ने उन्हें पहचाना था? इतनी बड़ी संगत में से सिर्फ लैहणा ने ही उन्हें पहचाना।

गुरु नानकदेव जी की धर्मपत्नी सदा ही आपसे यह शिकायत करती कि आप लैहणा से आसान काम करवाते हैं और अपने बच्चों से नाजायज काम करवाते हैं। गुरु नानकदेव जी ने कहा मेरे लिए लैहणा और बच्चे एक समान हैं। आपकी धर्मपत्नी ने कहा कि यही तो आपकी गलती है जो सेवकों को बच्चों के बराबर समझते हो। बच्चे बच्चे होते हैं क्योंकि हम दुनियां के लेवल से ही सोचते हैं।

गुरु नानकदेव जी ने कहा कि मैं आज आसान सा हुक्म दे देता हूँ तू बच्चों से कह दे कि वे यह काम कर लें। उस दिन काफी संगत आई हुई थी, बारिश हो रही थी लंगर की लकड़ियां गीली थी। गुरु नानकदेव जी ने अपने बेटों श्रीचन्द और लखमीदास से कहा, ''आज लंगर तैयार होना बहुत मुश्किल है परमात्मा सबको रोजी देता है तुम लोग परमात्मा का आसरा रखकर कीकर के पेड़ के ऊपर चढ़ो और इसे थोड़ा सा हिलाओ; नीचे मिठाई आ जाएगी।''

सन्तों के राज को कौन समझ सकता है? आपके बेटों ने कहा कि आप हमें वह काम कहते हैं जो हो ही नहीं सकता। क्या कभी पेड़ को भी मिठाईयां लगी हैं? फिर आपने भाई लैहणा की तरफ ईशारा किया कि तू पेड़ के ऊपर चढ़ संगत भूखी है।

भाई लैहणा गुरु नानकदेव जी को पहचान चुका था कि गुरु जो कहता है वह करके दिखा देता है, इसमें न मेरी कोई बदनामी है न शाबाशी है। लैहणा पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ को हिलाया तो नीचे मिठाईयां आ गई यह कोई करामात नहीं एक सच्चाई है क्योंकि सन्तों को समझना बहुत मुश्किल होता है। सूफी सन्त बुल्लेशाह कहते हैं:

गुरु जो चाहे सो करदा है, गुरु खाली भांडे भरदा है।

सन्त हमें बताते हैं अगर शेरनी का दूध रखना है तो सोने के बर्तन की जरूरत है, दूसरे बर्तन में यह दूध फट जाता है। इसी तरह जिसे संगत की जिम्मेवारी देनी है उस बर्तन को पहले से ही तैयार किया जाता है। गुरु कभी भी संगत को किसी अधूरे के पीछे लगाकर नहीं जाता, गुरु का चुनाव सही होता है।

एक लड़का बकरियां चरा रहा था, उसका नाम बूड़ा था। वह गुरु नानकदेव जी और बाला, मर्दाना के लिए दूध लाया। वह लड़का बहुत समझदारी की बातें कर रहा था। गुरु नानकदेव जी ने उससे कहा, ''तू बच्चा है लेकिन बातें बूढ़ो वाली करता है।'' गुरु नानकदेव जी ने उसका नाम बूड़ा से बूढ़ा रख दिया।

बाबा बूढ़ा गुरु नानकदेव जी के बाद छह गुरुओं तक जीवित रहा और उन्हें तिलक देता रहा। वह एक खास मुखिया सेवक था। जब उसका आखिरी वक्त आया तो गुरु हरगोबिंद ने उनका संस्कार किया, उनके प्रति इतनी हमदर्दी थी कि आपने विछोड़े के आँसू भी बहाए। बाबा बूढ़ा बहुत अच्छे थे इन्होंने बहुत सेवा की फिर भी कोई बहादुर आदमी ही गुरु की पहचान कर सकता है।

गुरु नानकदेव जी ने सोचा कि बाद में लोग यह न कहें कि गुरु का चुनाव गलत था। एक दिन आपने कहा कि हम सबने बाहर सैर करने चलना है। आपने बहुत से मुखिया सेवक अपने साथ ले लिए थोड़ी दूर जाकर आपने एक शिकारी का रूप धारण कर लिया, एक कुत्ता और छुरा ले लिया।

थोड़े बहुत मुखिया सेवको के मन में अभाव आ गया कि अब गुरु नानकदेव जी बूढ़े हो गए हैं इनका दिमाग ठीक नहीं। कुछ सेवक उनका पहनावा देखकर वापिस आ गए। थोड़ा आगे जाने पर गुरु नानक जी ने पैसों की वर्षा की वहाँ लोग माया उठाने लगे।

जब थोड़ा और आगे गए तो भाई गुरदास और बाबा बूढ़ा आपके साथ रहे, गुरु नानकदेव जी ने उन्हें भी वापिस जाने के लिए कहा लेकिन वे वापिस नहीं गए। गुरु नानक के पास सलोत्र भी था। जब आपने वह सलोत्र उन्हें मारा तो उन्होंने सोचा! इनका दिमाग ठीक नहीं है और वे भी वहाँ से भाग गए।

लैहणा वहाँ खड़ा रहा। गुरु नानकदेव जी ने सलोत्र लैहणा पर भी मारा। गुरु नानकदेव जी ने लैहणा से कहा कि सब भाग गए हैं तू क्यों नहीं भाग जाता? लैहणा ने कहा, ''मैं भागकर कहाँ जाऊँ! मैं जहाँ जाता हूँ वहाँ तू है।''

गुरु नानक जी ने लैहणा से कहा, ''यह मुर्दा पड़ा है तू इसे खा।'' लैहणा मुर्दे के चारो तरफ चक्कर काटने लगा तो गुरु नानकदेव जी ने नाराज़ होकर कहा, ''मैंने तुझे यह मुर्दा खाने के लिए कहा है और तू इसके चारों तरफ चक्कर काट रहा है।'' लैहणा ने कहा कि मैं इसे खाने से डरता नहीं हूँ लेकिन मैं आपके हुक्म का इंतजार कर रहा हूँ कि पैरों की तरफ से खाऊँ या सिर की तरफ से खाऊँ? जब उसने कपड़ा उठाकर देखा तो वह प्रसाद बना हुआ था।

महाराज सावन सिंह जी यह कहानी सुनाकर बहुत हँसा करते थे और आप यह भी कहा करते थे:

वैद्य वकील सन्त सरदारे, पिंड विच मान न पौंदे चारे,
नानक दादक ते घरवाली, ऐह वी रहण साध तो खाली।

जब मेरा गुरु परमात्मा रूप कृपाल मेरे आश्रम में आया तो मैंने उनसे कोई सवाल नहीं किया था। बस! यही कहा था कि मेरा दिल दिमाग खाली है; मैं यह नहीं कह सकता कि मैं आपको क्या कहूँ? आपने कहा कि मेरे पास बहुत लोग हैं, मैं खाली जगह देखकर ही आया हूँ। उस समय महाराज जी के पीछे बड़े-बड़े राजा महाराजा लीडर चक्कर लगा रहे थे।

आपने मुझे यह हुक्म दिया कि तूने अंदर बैठकर अभ्यास करना है। उस समय हर आदमी इस मौके की इंतजार में था कि मैं महाराज कृपाल के साथ अपनी फोटो खिंचवा लूं ताकि आने वाले कल में यह कह सकूँ कि मैं महाराज जी के साथ रहा हूँ, बाद में ऐसा ही हुआ।

जिसने भजन-अभ्यास किया था उसे न कोई फोटो का सबूत देने की जरूरत पड़ी और न वसीयत दिखाने की जरूरत पड़ी। जो गुरु का हुक्म मानेगा वह कभी भी अपनी तरफ से कुछ नहीं बोलेगा। वह यही कहेगा कि मैं वह बोलता हूँ जो गुरु मुझसे बुलवा रहा है। मैं वही करूंगा जो गुरु मुझसे करवाएगा। मैं वही खाकर खुश होऊंगा जो गुरु मुझे खाने के लिए देगा।

डाक्टर मौलीनो ने अद्या और काल के बारे में जो सवाल किया है अब आप उसका जवाब सुनें। आप कबीर साहब का अनुराग सागर पढ़ते हैं। जिसमें कबीर साहब बताते हैं कि परमात्मा के सोलह बेटे (शक्तियाँ) थे। उनमें से काल भी परमात्मा का एक बेटा है। परमात्मा का सबके साथ एक जैसा प्यार है। काल तेज अंग से पैदा हुआ इसलिए काल का स्वभाव इस तरह का था कि मैं अलग से अपनी रचना रचूं। मैं ऐसा द्वीप बनाऊँ जहाँ मेरा ही हुक्म चले कोई मुझसे हिसाब-किताब पूछने वाला न हो। काल ने एक बार सत्तर युग और एक बार चौसठ युग सतपुरुष की भक्ति करके परमात्मा को अपने ऊपर खुश कर लिया। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुप्ते बूझे जुग चेतारे।

यह भी एक अंदाजा है हो सकता है इससे भी ज्यादा भक्ति की हो। परमात्मा ने खुश होकर काल से पूछा तुझे किस चीज की जरूरत है? काल ने कहा, ''मुझे तेरी यह रचना अच्छी नहीं लगती। मैं अपनी रचना रचूंगा जहाँ कोई मुझसे न पूछे। मैं जो मर्जी करु चाहे किसी को आग पर बिठा दूं, चाहे किसी की खाल उतार दूं,

मुझसे कोई पूछने वाला न हो।'' सतपुरुष ने काल की सेवा से खुश होकर इसे बहुत सी आत्माएं सौप दी।

सतपुरुष ने आत्माओं से कहा कि काल एक द्वीप बसाना चाहता है। यह आपको हर तरह के बाग बगीचे देगा, आपके लिए बड़े-बड़े नजारे बनाएगा। उस समय एक जीव ने गिड़गिड़ाकर सतपुरुष से प्रार्थना की, ''हमें पता नहीं कि यह हमारे साथ क्या करेगा?'' सतपुरुष ने कहा, ''इसका मेरे इसके साथ यह वायदा है कि यह हर आत्मा को एक बार इंसानी जामा जरूर देगा। मैं भी इंसानों में इंसान बनकर आऊँगा। जो जीव इसके बहकावे में होंगे वे मेरी बात सुनने के लिए तैयार नहीं होंगे। जो मेरी बात को मान लेंगे मैं उन्हें इसी जगह ले आऊँगा।''

जब काल ने आत्माओं को शिला पर भूनकर खाना शुरू किया तब जीवों ने पुकार की। सोलह शक्तियों में से कबीर साहब सदा संसार में आते रहे हैं। काल कभी भी कबीर साहब को जीत नहीं सका क्योंकि कबीर साहब ने हमेशा ही सतपुरुष का बल महसूस किया लेकिन काल अपने बाहुबल पर निर्भर था।

काल ने सतपुरुष से वायदा लिया था कि जब तू संसार में इंसान का चोला धारण करके आए तो मेरा भवसागर न उजाड़ना और यह भी ध्यान रखना कि किसी को यह पता न चले कि पिछले जन्म में वह क्या था और अब वह कौन से कर्मों का कष्ट पा रहा है? मैं जिसे जहाँ जन्म दूं वह वहाँ खुश रहे। सूअर की योनि सबसे निम्न है वह भी अपनी योनि छोड़ने के लिए तैयार नहीं। आज हम यह सब कुछ आँखों से देख रहे हैं और कानों से सुन रहे हैं।

जिस तरह एक बादशाह के बहुत बेटे हैं। एक बेटा बादशाह से अलग होकर अपना राजपाट चला लेता है। वह अपने राज्य का मालिक है वह जो चाहे कानून बनाए उससे कौन पूछ सकता है!

काल त्रिलोकी का मालिक है, उससे कौन पूछ सकता है? हमारे राजस्थान की आम कहावत है कि रानी को कौन कह सकता है कि सिर पर कपड़ा कर, जो कहेगा वह सजा पाएगा।

डाक्टर मोलीना ग्रुप में संगत के फायदे के लिए सुलझे हुए सवाल करते हैं और हमें इनके जवाब देकर बहुत खुशी होती है। इससे संगत का बहुत फायदा होता है। संगत में बहुत से प्रेमियों के शक- शकूक निकल जाते हैं।

एक प्रेमी : मैं जब भजन-सिमरन के लिए बैठता हूँ, अपने मन के साथ लड़ता हूँ तब मेरे सिर में दर्द होने लगता है लेकिन बाद में मुझे परम आनन्द मिलता है?

बाबा जी : आप जब भजन-सिमरन के लिए बैठते हैं तब अपने मन पर काबू नहीं रख पाते तो आपको लगता है कि आप परम आनन्द महसूस कर रहे हैं लेकिन जब तक आप अपने मन के

साथ नहीं लड़ेंगे, बार-बार सिमरन नहीं दोहराएंगे तब तक अपने मन को काबू में नहीं कर सकते। भजन पर बैठते समय आपके अंदर बहुत से विचार आते हैं; उस समय आप अपने ध्यान को दोनों आँखों के बीच केन्द्रित करें।

आप भजन पर बैठते जरूर हैं लेकिन सिमरन नहीं कर पाते और घड़ी देखकर कह देते हैं कि मैंने एक या दो घंटे भजन-अभ्यास किया है असल में आपने भजन किया ही नहीं होता। आप एक चित्रकार हैं अगर आपका पूरा ध्यान आपके काम में नहीं होगा तो आप चित्रकारी नहीं कर सकते। आपका ध्यान इधर-उधर लगा होता है इसलिए आप अपनी अंतर्रात्मा से सिमरन नहीं कर पाते।

एक प्रेमी *: मैं जब भजन-सिमरन के लिए बैठता हूं तो मेरा ध्यान कभी दाईं तरफ कभी बाईं तरफ तो कभी किसी और तरफ चला जाता है। क्या ऐसा होने देना चाहिए या मुझे अपने ध्यान को बीच में ही केन्द्रित करना चाहिए?*

बाबा जी : हमने हमेशा ही अपने ध्यान को बीच में केन्द्रित करना है। मैंने आपको कई बार उदाहरण दिया है कि आर्मी में हमें राइफल चलाना सिखाया जाता था। हमसे कहा जाता था कि हमारा शरीर, राइफल और निशाना स्थिर होना चाहिए। इसी तरह जब हम भजन-सिमरन के लिए बैठते हैं, हमारा ध्यान दोनों आँखों के बीच केन्द्रित नहीं होता तो हमारा ध्यान कभी दाईं तरफ, कभी बाईं तरफ चला जाता है और हम अपने निशाने तक नहीं पहुँच पाते।

हमें 'नामदान' के समय जो निशान बताया है अगर हम उस निशान तक नहीं पहुंचते तो हम भजन का आनन्द नहीं पा सकते। जब हम अपने ध्यान को दोनों आँखों के बीच मे केन्द्रित करेंगे तो धीरे-धीरे हमारा मन स्थिर हो जाएगा और आनन्द आने लगेगा। हमें भजन पर बिना हिले-डुले बैठना चाहिए।

***

दिल्ली में सतसंग का कार्यक्रम

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से दिल्ली में 18,19 व 20 मई 2012 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनती है कि सतसंग में पहुँचकर सन्त वचनों से लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हाल,
भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार,
(नज़दीक पीरा गढ़ी चौक)
नई दिल्ली - 110 087

अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से अहमदाबाद में 6,7 व 8 जुलाई 2012 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनती है कि सतसंग में पहुँचकर सन्त वचनों से लाभ उठाएं।

श्री देशी लोहाणा विद्यार्थी भवन,
फुटबाल ग्राउंड के सामने,
(कांकरिया झील के पास)
अहमदाबाद - 380 008 (गुजरात)